पोवार(पंवार) समाज से संबंधित ऐतिहासिक तथ्य (हर 36 कुल पंवार या पोवार व्यक्ति को जानने योग्य आवश्यक तथ्य)

इतिहास के अनुसार हम पंवार या पोवारों के सिर्फ और सिर्फ 36 क्षत्रिय कुल है।

■36 कुल का उल्लेख इतिहासकार रसेल ने सन 1913 के दरम्यान उसकी किताबों में किया है।

■सन 1913 के दरम्यान रसेल ने तत्कालीन सेंट्रल प्रोविंस के हमारे पंवार राजपूत कुलो का उल्लेख किया है और वह सभी कुल सिर्फ हमारे 36 कुल के ही है। उसमें 36 के बाहर के कोई नहीं।

■सन 1872 की ब्रिटिश एथेनॉलॉजिकल रिपोर्ट में हमारे समाज के जो कुल बताए है वे हमारे 36 कुल ही है।

■सन 1892 में स्व श्री लखारामजी तूरकर जी ने उनकी किताब में लिखे समाज के दोहे में सिर्फ छत्तीस कुल का उल्लेख किया है।

■ स्व. पन्नालाल जी बिसेन , पूर्व अध्यक्ष अखिल भारतीय क्षत्रिय पंवार महासभा इन्होंने भी हम पंवारो के 36 कुल बताए है।

■सन 1998 में प्रकाशित "इंडियाज कम्युनिटीज" वॉल्यूम 6 पृष्ठ क्रमांक 2839 पर श्री के एस सिंग ने 36 कुल क्षत्रिय पंवारो के बारे में उल्लेख किया है। श्री सिंग एंथ्रोपोलॉजीकल सर्वे ऑफ इंडिया के डायरेक्टर थे।

■रतलाम से हमारे साथ जो भाट आए थे उनके वंशज श्री बाबूलाल भाट इनसे प्राप्त पोथियों मे भी हमारे 36 कुल ही है।

हमारा 36 कुल क्षत्रिय पंवार समुदाय धारानगर , पश्चिम मालवा , राजपुताने से सन 1700 के दरम्यान नगरधन आया और वहासे भंडारा , गोंदिया, बालाघाट, सिवनी में जाकर बसा। ये हमारे 36 कुल सदियों से एक साथ रहने से हमारी संस्कृति , बोली ,

परम्परा, दस्तूर , पूजन पद्धति , देवता , रक्तसंबंध एक जैसे है। हमारे 36 कुल के अलावा अन्य समाज में या अन्य कुलो में विवाह नहीं होते थे । वर्तमान में कही होते है तो उन्हें अंतर्जातीय विवाह माना जाता है। वे हमारे 36 कुल इस प्रकार है –

हमारे विवाह योग्य सजातीय कुल है

अम्बुले , कटरे , कोल्हे ,गौतम, चौहान, चौधरी, जैतवार, ठाकुर या ठाकरे, टेंभरे , तुरकर, पटले, परिहार, पारधी, पुन्ड , बघेले, बिसेन , बोपचे , भगत, भैरम, भोयर, एडे या येड़े, राणा, रहांगडाले, रिनायत, शरणागत, सहारे, सोनवाने, हनवत , हरिणखेडे, क्षीरसागर, डाला

(बाकी रणमत, फ़रीदाला , रजहांस, रंदीवा , रावत ये कुल नहीं मिलते)